एक अभूतपर्व अलौकिक दिव्य समारोह

डायमण्ड हॉल सभागृह में अलौकिक, दिव्य समारोह में मंचासीन हैं संगठन की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी तथा वरिष्ठ भाई बहनें व समर्पण का संकल्प लेते हुए बहनें।

शांतिवन। बारिश की रिमझिम के मध्य नुमाशाम के समय डायमण्ड हॉल में इन्द्र के साक्ष्य में परियों को स्वयं भाग्यविधाता द्वारा निहारते देखा। इस घड़ी का लुत्फ हर कोई उठाना चाहता था और अपनी उपस्थिति की दस्तक देना चाहता था। ऐसा हो भी क्यों ना, क्योंकि परमात्मा के विश्व परिवर्तन के भागीरथ कार्य को करीब दो सौ बाल ब्रह्मचारी बहनों ने आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प किया। समय,श्वास, तन, मन और सर्वस्व समर्पण करने का संकल्प लिया। जैसे ही दादीजी ने डायमण्ड हॉल सभागृह में प्रवेश किया, चारो ओर एक अलौकिक आभा की छटा बिखरने लगी। पूरी सभा स्वर्णिम चुन्नी पहनकर समर्पित होने चली कुमारियों से सजी हुई थी। यह दृश्य बहुत ही अलौकिक, आकर्षक व रमणीय था। कार्यक्रम के पूर्व में नन्हें बच्चों ने अपनी भावनाओं के प्रतिकात्मक रूप में नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को विधिपूर्वक

ईश्वरीय कार्य अर्थ समर्पण संकल्प

1. मैं स्वेच्छा से प्रभु कार्य के लिए समर्पित होने जा रही हूँ।
2. ईश्वरीय मर्यादाओं में रहकर हर श्वास और समय सफल करूंगी।
3. ना मैं किसी से ईर्ष्या, द्वेष रखूंगी, ना पांचों विकारों के वशीभूत होऊंगी और ना ही दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार रखूंगी।
4. निमित्त दादी जी जहां भी ईश्वरीय सेवार्थ भेजेंगी वहां सहर्ष जाऊंगी।
5. परमात्मा के परिवर्तन के कार्य को पूरे समर्पण भाव से निभाऊंगी।

अंजाम देने के लिए सभी को दृढ़ संकल्प पत्र पढ़कर सुनाया गया। इस अलौकिक समारोह के मध्य कुमारियों के माता-पिता ने भी हृदय से अपनी पुत्रियों को इस कार्य के लिए स्वीकृति प्रदान की। इस समारोह में प्रत्यक्षदर्शियों का कहना था कि ऐसा समारोह मैंने अपने जीवन में नहीं देखा जो इतना अलौकिक, दिव्यतम और खुशियों से भरा हो और जिस वातावरण में ये कुमारियां प्रभु के कार्य में समर्पण होकर जीवन बिताने जा रही हैं। कार्यक्रम के अंत में दादीजी ने सभी के साथ मिलकर केक काटा और अपने हाथों से सबको खिलाया।

अध्यात्म संस्कार व संस्कृति का सेतु

त्रिदिवसीय धर्म सम्मेलन का आयोजन

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए अतिथिगण

ब्रह्माकुमारीज़ के मनमोहिनी वन परिसर के ऑडिटोरियम में सर्व धर्म सम्मेलन का हुआ आयोजन

शांतिवन। विज्ञान कहता है बदलाव के बिना प्रगति नहीं। विज्ञान ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन मन की शांति नहीं दे सका। इसके लिए हर एक भटक रहा है। अध्यात्म और परमात्मा के सानिध्य से ही सच्ची शांति की प्राप्ति हो सकती है। कोई भी धर्म या मज़हम हो, आपस में प्यार रखना सिखाता है वैर नहीं। उक्त उद्‌गार ब्रह्माकुमारीज़ के धार्मिक प्रभाग द्वारा मनमोहिनी वन परिसर में आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए जोधपुर के सवामी शिवस्वरूपानंद ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि संस्कार और संस्कृति से देश बनता है, इतना ही नहीं, संस्कृति देश की शोभा है। संस्कृति के ऊपर जो देश ध्यान देता है वह देश अपने आप ऊपर आएगा। किसी देश को मिटाना है तो कोई शस्त्र की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ संस्कृति मिटा दो देश मिट जाएगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि धर्म बहुत हैं, लेकिन धर्मयुक्त कर्म न होने के कारण प्राप्ति नहीं हो रही है।

इस अवसर पर अयोध्या के हरिधाम पीठ गोपाल मंदिर के स्वामी रामदिनेशाचार्य, सीतापुर के स्वामी केशवानंद सरस्वती, धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. मनोरमा, धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. रामनाथ, सिक्ख धर्म, वृंदावन के स्वामी अनिरूद्ध महाराज, करनाल के प्रधान गुरुद्वारा प्रबंधक जगदीश सिंह झिंडा, ऑल इंडिया मुस्लिम फेडरेशन अयोध्या के महासचिव अब्दुल लतीफ समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मलाड सेवाकेन्द्र प्रभारी कुंती ने किया।

मेमोरी पावर बढ़ाने का आधार मेडिटेशन

नवसारी। जे.एन. टाटा हॉल में `द साइंस ऑफ माइंड मैनेजमेंट' विषय पर सम्बोधित करते हुए प्रो. ब्र.कु. स्वामीनाथन ने कहा कि अगर मन को नियंत्रित रखा जाए तो इससे हमारी मेमोरी पावर में अद्‌भुत वृद्धि होती है। उन्होंने ये विचार नारनलाला एज्युकेशन इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ. रमेश सी. गांधी के निवृत्ति अभिवादन समारोह में व्यक्त किये। इस ज़बरदस्त याद शक्ति के पीछे लगातार मेडिटेशन का अभ्यास बताया। साथ साथ उन्होंने बताया कि शब्दों को याद रखने के लिए उनका इमेज क्रियेट करना चाहिए न कि रटना। कई बार मनुष्य भूलने वाली बातों को तो याद रखता है, परन्तु याद रखने योग्य बातें भूल जाता है, जिसके कारण ही वो स्वयं, स्वयं को परेशान करता है। अतः मेडिटेशन द्वारा ज़रूरी बातों को याद रखने तथा अनावश्यक बातों को भूलने की भी कला स्वतः आ जाती है।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी मेमोरी को ट्रेन्ड करना पड़ता है। सर्व स्मृतियाँ इस शरीर के अंदर (हार्डवेयर), जो चैतन्य ऊर्जा आत्मा (सॉफ्टवेयर) है, उसमें सेव होती हैं। जैसे मोबाईल का डाटा मेमोरी कार्ड में, कम्प्युटर का डाटा हार्डडिस्क में, विमान का डाटा उसके ब्लैक बॉक्स में सेव होता है, ठीक वैसे ही हमारे अंदर जो ऊर्जा आत्मा (ए प्वाइंट ऑफ लाइट) छोटी सी है उसमें सब कुछ सेव होता है। आत्मा के बिना यह शरीर मात्र साधन रह जाता है जैसे कि सिम कार्ड के बिना मोबाईल। इसके बाद उन्होंने सभी को होमवर्क भी दिया जिसका रोज़ सुबह-शाम अभ्यास करने को कहा - `आई एम ए हैप्पी एंड पावरफुल सोल' इससे स्वयं को ऊर्जावान व शांतिवान अनुभव कर सकेंगे।

विशेष आर.सी. गांधी को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि एक शिक्षक कभी भी निवृत्त नहीं होता। वह सदैव कुछ न कुछ सीखता व सिखाता रहता है। इसके बाद सभी ने डॉ. आर.सी. गांधी को अपनी-अपनी शुभकामनाएं तथा सौगातें दीं। संस्थान की तरफ से सम्मान पत्र भेंट किया गया तथा ब्र.कु. स्वामीनाथन के हस्तों से श्री गांधी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। ब्र.कु. गीता,नवसारी सेवाकेन्द्र संचालिका ने ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट कर शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में लगभग 500 कॉलेज के स्टूडेंट्स प्रोफेसर्स, व्यापारीगण व शहर के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

समारोह में शरीक मेहमानों की उपस्थिति में डॉ. रमेश सी. गांधी का सम्मान करते हुए ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 16th Aug 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।